(1)

राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृतान्त

अंक 5] सप्तम् विधान सभा के पंचम सत्र का चतुर्थ दिवस [संख्या 4

बृहस्पतिवार

दिनांक 9 सितम्बर, 1982

विधान सभा की बैठक म.पू.

11.00 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री पूनमचन्द, विश्नोई, अध्यक्ष, पदासीन)

शोकाभिव्यक्ति एवं श्रद्धांजलि

जम्मू एवं कश्मीर के मुख्य मंत्री शेख मोहम्मद अब्दुल्ला को श्रद्धांजलि

श्री अध्यक्ष : शेख अब्दुला के निधन पर शोकाभिव्यक्ति।

श्री शिवचरण माथुर (मुख्य मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, बड़े दुख के साथ यह समाचार मैंने सुना कि कल रात को जम्मू-कश्मीर के मुख्य मंत्री और इस देश के महान् नेता शेख मोहम्मद अब्दुल्ला का देहावसान हो गया।

शेख साहब 1905 में श्रीनगर में सोरा गांव में पैदा हुए। प्रारम्भ से ही, विद्यार्थी जीवन से ही उनमें राष्ट्रीय भावना जाग्रत थी। हिन्दुस्तान की आजादी के लिए राष्ट्रीय भावना और स्वतन्त्रता की भावना से शेख साहब का जीवन प्रारम्भ हुआ। आजादी की लड़ाई में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

उन्होंने 1943 में नेशनल कान्फ्रेन्स को जन्म दिया। उनका विश्वास था कि हिन्दुस्तान में आजादी के बाद धर्म-निरपेक्षता की स्थापना होनी चाहिये, उसी भावना को ध्यान में रखते हुए जब उनके साथियों ने हिन्दुस्तान में उनकी नेशनल कान्फ्रेन्स पार्टी को मुस्लिम नाम देना चाहा तो उन्होंने उसका विरोध किया। उन्होंने इसी आधार पर हिन्दुस्तान में धर्म-निरपेक्ष राज्य की कल्पना की। 1946 में, मुझे अच्छी तरह से स्मरण है, शेख साहब नेशनल कान्फ्रेन्स के अध्यक्ष बने। 31 दिसम्बर, 1945 और 1 जनवरी, 1946 को जब उदयपुर में आल इण्डिया स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेन्स का जलसा हुआ था, पण्डित जवाहरलाल नेहरू वहां आये थे। पहली बार हिन्दुस्तान में देशी रियासतों का इतना बड़ा सम्मेलन हुआ था। एक विद्यार्थी की हैसियत से उस समय उदयपुर में मुझे शेख साहब का स्वागत करने का अवसर मिला था। मुझे स्मरण है कि हिन्दुस्तान की देशी रियासतों में जिम्मेदाराना हुकूमत कायम करने का प्रस्ताव, जो पूर्ण राजनैतिक प्रस्ताव था, शेख साहब ने उस सम्मेलन मे पहली बार प्रस्तुत किया था, 562 देशी रियासतों के उस भारी

(श्री शिवचरण माथुर)

सम्मेलन में शेख साहब ने पहली बार यह ऐलान किया था कि देशी रियासतों में जिम्मेदाराना हुकूमत कायम की जाय और हिन्दुस्तान की आजादी के लिए सब एक हो जायें, उसके ठीक बाद देशी रियासतों के शेख साहब अध्यक्ष हुए और उनमें जिम्मेदाराना हुकूमत कायम करने का प्रयत्न किया।

आजादी के बाद, शेख साहब 1948 में जम्मू-कश्मीर के प्रधान मंत्री बने। उन्होंने प्रधान मंत्री की हैसियत से और उसके बाद में जम्मू-कश्मीर के मुख्य मंत्री की हैसियत से आधुनिक जम्मू-कश्मीर के निर्माण की आधार शिला रखी। जो कुछ भी आज उस प्रदेश में देखा जाता है वह शेख साहब की देन है।

वह प्रजातन्त्र, धर्म-निरपेक्षता और निर्भीकता में विश्वास रखते थे। निर्भीकता के कारण ही लोग उनको शेरे-कश्मीर के नाम से जानते थे। शेख साहब ने अपने शासन-काल में जम्मू-कश्मीर में बहुत से सामाजिक सुधार किये। विशेष रूप से जम्मू-कश्मीर में स्त्री शिक्षा आगे बढ़ी, इसका श्रेय अगर किसी को है तो वह शेख अब्दुल्ला को है। पर्दा प्रथा, रूढ़िवाद और पिछड़ेपन के वह खिलाफ थे। उनका प्रयत्न था कि जम्मू-कश्मीर जो हमारे भारत का शीर्ष स्थान है, सिरमोर है एक अच्छे प्रदेश की हैसियत से रहे। उन्होंने अपने प्रदेश के विकास के लिये सतत् प्रयत्न किया। आज का जम्मू-कश्मीर उनकी ही देन है।

उनके निधन से उनके परिवार को तो क्षति हुई ही है, जम्मू-कश्मीर को तो क्षति हुई ही है लेकिन मैं ऐसा मानता हूं कि सारे देश ने एक ऐसे महान् नेता को खो दिया जिसने आजादी के पहले निरन्तर संघर्षरत रह कर के इस देश को आजादी दिलाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। साथ ही आजादी के बाद राष्ट्रीय विचारों के आधार पर, धर्म-निरपेक्षता के विचारों के आधार पर हमारे मुल्क को आगे बढ़ाने में उनका बड़ा योगदान रहा है। आज सारा जम्मू-कश्मीर और देश यह महसूस करता है कि हमारे इस महान् देश के महान् व्यक्तियों की शृंखला में से धीरे-धीरे जो लोग उठते जा रहे हैं उनमें शेख साहब भी एक थे। कल रात यह समाचार सुनकर सबको शोक हुआ।

मैं इस मौके पर, इस अवसर पर अपनी ओर से और सदन के माननीय सदस्यों की ओर से स्वर्गीय शेख साहब को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। ईश्वर से यह प्रार्थना करता हूं कि वह उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें और उनके शोक संतप्त परिवार को और जम्मू-कश्मीर प्रदेश की सारी जनता को जो अपूर्ति योग्य क्षति हुई है उसको सहने की शक्ति प्रदान करें।

श्री भैरोंसिंह शेखावत (नेता, प्रतिपक्ष): अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्रीजी ने स्वर्गीय शेख अब्दुल्ला के सम्बन्ध में जो शोकाभिव्यक्ति का प्रस्ताव सदन में प्रस्तुत किया है मैं उसका समर्थन करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, शेख साहब का व्यक्तिगत जीवन जिस प्रकार का रहा उसके सम्बन्ध में विशेष कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। हिन्दुस्तान का बच्चा-बच्चा इस बात से परिचित है कि इस देश का ऐसा नागरिक, जिसने आजादी से पहले संघर्ष किया और

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)
जिसने आजादी के बाद भी अपने संघर्ष को चालू रखा, हिन्दुस्तान में आज ढूंढने से भी कोई मिलता है तो केवल शेख साहब ही मिलते हैं। हिन्दुस्तान की आजादी के पहले जो कितनी ही बार जेल गये और आजादी के लिये उन्होंने किस प्रकार संघर्ष किया, उसका तो, मैं समझता हूँ, सब प्रकार से सब जगह उल्लेख मिलेगा, लेकिन आजादी के बाद जिस व्यक्ति ने 13 वर्ष जेल में काटे हों, ऐसा व्यक्ति हिन्दुस्तान में और कोई मिलने वाला नहीं है।

अध्यक्ष महोदय, यदि किसी ऐसे व्यक्ति से संघर्ष की प्रेरणा लेनी है जिसके लिये संघर्ष को अन्तिम छोर तक ले जाने के लिये कितनी ही कुर्बानियों की आवश्यकता है, उन कुर्बानियों का सिद्धान्तों के समक्ष कोई महत्व नहीं है बल्कि सिद्धान्त का महत्व है तो मुझे कहने में कोई संकोच नहीं होगा कि हिन्दुस्तान की आज की पीढ़ी को ऐसे संघर्ष की प्रेरणा शेख साहब का व्यक्तित्व और जीवन निश्चित रूप से दे सकता है।

अध्यक्ष महोदय, मैंने उनको दोनों रूपों में देखा, हमारे कट्टर विरोधी के रूप में भी मेरा उनके साथ वास्ता पड़ा है और व्यक्तिशः मित्र और बन्धु के रूप में भी वास्ता पड़ा है। कश्मीर की कुछ विशेष समस्याओं को लेकर डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने आन्दोलन प्रारम्भ किया। उस आन्दोलन में डा. मुखर्जी स्वर्गवासी हो गए। हमारी पार्टी ने उस विषय को लेकर आन्दोलन किया। उस आन्दोलन में जिस प्रकार की भी स्थिति थी उस स्थिति से निपटने के लिए हमने शेख साहब से बातचीत करके देखी वह भी मुझे अच्छी तरह से ध्यान में है लेकिन हाल ही में जब वे मुख्य मंत्री बने उसके बाद जब मैं उनके सम्पर्क में आया और जब मैं मुख्य मंत्री बना तब जिस प्रकार का उनसे सम्पर्क हुआ, उससे मैं, अध्यक्ष महोदय, यह कह सकता हूं दूर से किसी आदमी को देखने से उसकी खूबियों की उतनी जानकारी नहीं मिल सकती जितनी उसके निकट आने से उसकी खूबियों की जानकारी मिल सकती है। मैंने अपने मुख्यमंत्रित्व काल में कोई दिन ऐसा नहीं देखा होगा जब शेख साहब दिल्ली में रहे हों और जोधपुर हाउस में या तो वह स्वयं नहीं आये हों या मुझे आने का निमंत्रण नहीं दिया हो। किसी राजनैतिक चर्चा के लिये सारी स्टेट्स मिलकर भारत सरकार से अपने-अपने राज्यों के विकास के लिये किस प्रकार से धन ज्यादा जुटा सकती हैं, उनका यह दृष्टिकोण रहता था। हर सप्ताह दो तीन मुख्य मंत्री मिलकर आपस में इस बात की चर्चा किया करते थे। शेख साहब ने उस चर्चा में जिस प्रकार अपना व्यक्तित्व प्रकट किया उससे ऐसा लगता था कि वह केवल राजनैतिक सिद्धान्तों से ही परिचित हों ऐसी बात नहीं थी, प्रशासनिक मामलों का भी उनको बहुत अच्छा ज्ञान था। भारत सरकार को प्रभावित करके अपने राज्य के विकास के लिये किस प्रकार धन एकत्रित किया जा सकता है या लिया जा सकता है, इस सम्बन्ध में भी उनको काफी ज्ञान था।

अध्यक्ष महोदय, स्टेट्स की आटोनामी के सम्बन्ध में आज कई प्रकार की चर्चा चलती हैं लेकिन हमारा जिस प्रकार का राजनैतिक ढांचा है और संविधान में राज्यों को जिस

(श्री भैरोसिंह शेखावत)

प्रकार के अधिकार मिले हुए हैं उन अधिकारों पर भारत सरकार किसी भी प्रकार से कुठाराघात कर सके, इस चीज की रोकथाम में यदि कोई अगुआ था आज के दिन हिन्दुस्तान में तो मैं निस्संकोच कह सकता हूं कि भाग्य से शेख अब्दुल्ला अगुआ थे। स्टेट्स के अधिकारों पर कहीं थोड़ी बहुत आंच आती चाहे राजस्थान में हो, चाहे पंजाब में हो, चाहे हरियाणा में हो तो यदि किसी व्यक्ति का वक्तव्य अखबारों में प्रकाशित होता था तो शेख अब्दुल्ला का वक्तव्य होता था। इतने सजग वह अवश्य थे।

अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात और कहूंगा। पिछले एक महीने से राजनैतिक घटनाक्रम को देखें तो आज तक राजनेता कई प्रकार की चर्चायें करते हैं, राजनेताओं के जो समर्थक हैं वे भी कई प्रकार की चर्चायें करते हैं लेकिन, मुझे याद है, मैंने आज भी समाचार-पत्रों को देखा, आज से 27 दिन पहले टाइम्स आफ इण्डिया अखबार में छपा कि शेख अब्दुल्ला के उत्तराधिकारी को लेकर विवाद छिड़ा है, विवाद बहनोई और लड़के में है कि कौन उत्तराधिकारी बनेगा। अब, अध्यक्ष महोदय, आप अनुमान लगायें कि आज से 27 दिन पहले उत्तराधिकारी का संघर्ष चालू होता है, 10 दिन पहले अपने लड़के को शपथ ग्रहण कराते हैं, आज से तीन दिन पहले लड़के और अपने जंवाई मिस्टर शाह के बीच में विवाद खतम करते हैं और रात को सारी समस्याओं का समाधान करके स्वर्ग चले जाते हैं। इस प्रकार की कल्पना करना, यह भी इस बात का संकेत करता है 'कि उस आदमी की आत्मा इतनी शुद्ध थी कि भविष्य में होने वाली घटनाओं का ज्ञान उनको एक महीने पहले हो गया था।

चर्चायें खूब करते हैं, राजनेता राजनैतिक क्षेत्र में काम करने वाले सब तरह की चर्चायें करते हैं किन्तु जम्मू-कश्मीर के मसले पर यदि, अध्यक्ष महोदय, गहराई से विचार करें तो हम ऐसे संकट में फंसे हुये हैं कि एक तरफ पाकिस्तान हमारी छाती पर खड़ा है दूसरी तरफ अफगानिस्तान के माध्यम से रूस हमारी छाती के नजदीक आ गया है दोनों के बीच में हम इस प्रकार से सैंडविच हुए हैं कि यदि कोई प्रभावशाली व्यक्तित्व जम्मू-कश्मीर के प्रधान मंत्री के पद पर नहीं होता तो चाहे जम्मू का हिस्सा हो, चाहे गिलगिट का हिस्सा हो, चाहे लद्दाख का हिस्सा हो, चाहे ऊंझा का चाहे कारगिल का हो जितने भी हिन्दुस्तान के हिस्से हैं उन पर किसी न किसी प्रकार कोई न कोई अधिकार कर लेता। यह शेख साहब की करामात थी कि दूसरी ताकतों को उन्होंने हमारी धरती पर पैर रखने नहीं दिया।

अभी, अध्यक्ष महोदय, हाल ही में ऊंझा के संबंध में चर्चा हुई, शेख ने उसका विरोध किया। अभी 5–7 दिन पहले लैंड रिफार्म्स के प्रश्न पर एक विवाद खड़ा हुआ कि लैंड रिफार्म्स कानून ठीक प्रकार से नहीं बना उसको लागू नहीं किया गया। किसी समाचार-पत्र ने टिप्पणी कर दी कश्मीर के मसले पर कि लैंड रिफार्म्स का असर कश्मीर पर हुआ ही नहीं है तो शेख साहब का स्टेटमेंट था कान्ट्रेडिक्शन का, मैंने उसको देखा। वह बड़ा मजेदार स्टेटमेंट है। उन्होंने कहा, लैंड रिफार्म्स को समझने वाले लोग अगर लैंड रिफार्म्स के बारे में कुछ लिखते

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

तो मेरी समझ में आता। कश्मीर में कैसी धरती है, किस प्रकार की जलवायु है, किस प्रकार की पानी की सुविधा है, यदि इन तीन चीजों को अलग अलग रख कर लैंड रिफार्म्स के नाम पर जिन लोगों के पास साधन हैं, थोड़ी बहुत भी खेती कर पाते हैं उनको उस खेती से महरूम कर दूं तो काश्मीर में जितना अन्न का उत्पादन होता है, जिस प्रकार फूड-ग्रेन्स की हम योजना बनाकर उत्पादन बढ़ाने का काम कर रहे हैं वह सारी चीजें बन्द हो जायेंगी।

मैं समझता हूं, सारे क्षेत्रों का ज्ञान रख कर उस व्यक्ति ने जम्मू-कश्मीर की सेवा की, देश की सेवा की। कई बार संघर्ष भी हुआ, संघर्ष में अपनी गलतियों को स्वीकार करने में भी उनको कोई संकोच नहीं हुआ। संघर्ष किसी सीमा तक गलत रास्ते पर चला गया तो वापस उसको सही करने में उनको संकोच नहीं हुआ। ऐसी स्थिति में ऐसे व्यक्ति का उठ जाना और ऐसे मौके पर उठ जाना जिस समय हमारे दरवाजे पर विदेशी ताकतें खड़ी हुई हैं, हमको हरदम जिस बात का खतरा बना रहता है उस खतरे का पहला प्रहरी, उस खतरे का मुकाबला करने के लिए जो व्यक्ति भारत के दरवाजे पर खड़ा था, दुर्भाग्य से उस दरवाजे से उस व्यक्ति के उठ जाने का हमें बड़ा दुख है।

अध्यक्ष महोदय, मैं एक चीज नहीं कहना चाहता, व्यक्तिशः मुझे उनसे जिस प्रकार से स्नेह था, मैं नहीं कहना चाहता। आज के 10–11 दिन पहले की बात मैं बता रहा हूं। 10–11 दिन पहले जब मुझे पता लगा कि उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं है, मैंने सूचना दी, उससे पहले उनकी सूचना आई कि मेरा स्वास्थ्य बिलकुल ठीक है और भेंट स्वरूप उन्होंने थोड़ी सी केसर भेजी। मैं समझता हूं उसको सुरक्षित रखूंगा इस बात के लिए कि जब तक शेख साहब की स्मृति है, केसर उसी प्रकार पड़ी रहे। केसर लाने वाला वह व्यक्ति आज भी जयपुर में बैठा है। वह केसर लाया, पत्र लाया। आज भी वह जयपुर में है, उनकी दो लड़कियां मेडिकल कालेज में पढ़ती हैं। उन्हीं के नाम से और उन्हीं के कारण से, उन्हें मेडिकल कालेज में मैंने एडमिट कराया था। वही व्यक्ति लेकर आया, मुझे पता नहीं था कि शेख साहब इतनी जल्दी चले जायेंगे।

मैं इसलिये जो कुछ मुख्य मंत्री ने कहा है उनकी भावनाओं में अपने आपको शामिल करते हुये उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। भगवान उनके शोक संतप्त परिवार को इस गहन शोक को सहन की शक्ति प्रदान करें और उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें। यही भगवान से मैं प्रार्थना करता हूं

श्री राज बहादुर (भरतपुर) : अध्यक्ष महोदय, भारत के निर्माताओं में, स्वतन्त्र भारत के निर्माताओं में से एक शानदार हस्ती हमारे बीच में से चली गई। शेख साहब को केवल हम इसलिये याद नहीं करते कि वह सफल राजनीतिज्ञ थे, एक शानदार इन्सान थे, एक अद्भुत प्रतिभाशाली प्रशासक थे, बल्कि सबसे बड़ी याद है कि हम लोगों के उनके साथ बहुत सम्बन्ध थे और हमारा सौभाग्य था उनके पास बैठने का, वही याद दिलाता है कि एक महान् स्वतन्त्रता सेनानी, महानतम स्वतन्त्रता सेनानी हमारे बीच में से उठ गया। कोई संदेह नहीं कि देश

(श्री राज बहादुर)
रजवाड़ों की आजादी का इतिहास जब लिखा जायेगा तो शेख अबदुल्ला का नाम, शेरे कश्मीर का नाम अग्रिम पंक्ति में आयेगा। सबसे पहले हमारी आल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेन्स, अखिल भारतीय देशी राज्य परिषद् के अध्यक्ष थे स्वयं पंडित जवाहर लाल नेहरू, दूसरे अध्यक्ष थे शेख मोहम्मद अब्दुल्ला।

अध्यक्ष महोदय, उस समय की याद आती है जब कि मैसूर के के. टी. भास्टियान, ट्रावनकोचीन के श्री पटमथान पिल्लई, हैदराबाद के स्वामी रामानन्द तीर्थ, गुजराती रजवाड़ों के श्री बलवन्तराय मेहता और उड़ीसा के श्री सारंगदास थे, आदि आदि महान् नेता हमें याद आते हैं। जहां हमें शेरे कश्मीर की याद आती है वहां शेरे राजस्थान जयनारायण व्यास की याद भी आती है जो कि उनके जनरल सैक्रेटरी थे। वह आल इण्डिया स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेंस के अध्यक्ष थे। हम लोग उनके छोटे मोटे साथी थे। दीवानचन्द हाल में सन् 47 में जब कि पण्डितजी तिहाड़ जेल से छूट कर आये थे उसके बाद में जो कुछ हुआ वह सब कुछ मुझे याद आता है। उससे मैं कह सकता हूं कि जब विधान निर्मात्री परिषद् बनी शेख अब्दुल्ला जम्मू-कश्मीर से उसमें आये, जब कभी वे बोलते थे एक नया प्रकाश पड़ता था। कश्मीर को एक विशेष स्थान क्यों दिया जाय वह इसके लिये लड़े थे और सफलता प्राप्त की थी। लेकिन वह देशी रजवाड़ों के लिये भी लड़े। उस समय बड़ा भारी भेद था पार्ट ए स्टेट में और पार्ट बी स्टेट में। हमारी सबकी चाहना यह थी पार्ट बी स्टेट जो देशी रजवाड़ों की थी और पार्ट एस्टेट जो कि ब्रिटिश प्रान्तों की थी, उनमें कोई भेद नहीं हो। उनका जूरिस्डिक्शन समान हो सुप्रीम कोर्ट का और लेजिस्लेचर का, कम्युनिकेशन का जुरिस्डिक्शन पूरा हो। शेख अब्दुल्ला ने हम लोगों का साथ दिया था। वह जमाना हमें याद आता है व उनके साथ हमें अपने भी स्वतन्त्रता सेनानी याद आते हैं विजयसिंह पथिक, जगदीश सिंह बारहट, स्वामी कुमारानन्द, जयनारायण व्यास, माणिक्य लाल वर्मा, गोकुलभाई भट्ट। वह लग भग पंक्ति उठ चुकी है। गोकुल भाई भट्ट एक शेष हैं। हम लोग जो बाकी हैं हम चाहे अपने आपको निर्माता कहें नये भारत का, नये राजस्थान का चाहे कुछ भी कहें, हमारी पीढ़ी तो दूसरी पीढ़ी थी मेरे जैसे तो अंतिम पंक्ति में थे यह कह सकते हैं कि जो हमारे प्रेरणा के स्रोत थे। हम यह कह सकते हैं कि सेक्यूलेरिज्म की, धर्म निरपेक्षता की या सर्व धर्म सम्भाव की अगर सबसे पहले किसी से प्रेरणा ली तो उन महान् मुस्लिम नेताओं से मिली हमको जिनका नाम आज भी गर्व के साथ इज्जत के साथ लेते हैं। जिनमें शराफुदौल्ला से लेकर मौलाना आजाद तक और मौलाना आजाद से लेकर शेख अब्दुल्ला तक एक शानदार इतिहास बनाया है, देश का जो हमेशा इस बात की याद दिलायेगा कि धर्म, मजहब और जाति राष्ट्र नहीं बनाती राष्ट्र बनाते हैं आम भावनायें।

अभी अभी कई बातें कही गई। मैं इतना ही कह सकता हूं कि जहां तक विलय का संबंध था जम्मू और कश्मीर का भारत में, जो वह न तो पण्डितजी, जवाहरलाल नेहरू की देन थी और न ही महाराजा हरिसिंह जी की देन अगर शेख अब्दुल्ला नहीं होते तो यह कभी

(श्री राज बहादुर)

भी नहीं होता, यह निश्चित बात है। शेख अब्दुल्ला ने स्वयं ने रिक्वेस्ट की थी। यह भी बात है कि सन् 1953 में मतभेद पैदा हो गये थे किसी कारण। कारण यह था एक विशेष राजनैतिक चर्चा यहां पर उठायी गई इसलिये मुझे यह कहना पड़ा कि आर.एल. स्टीवेन्शन, जो वाइस प्रेसीडेण्ट थे अमेरिका के आये थे, उसके बाद कुछ ऐसा मुगालता, धुंधलापन सा छाया था कि दुर्भाग्यपूर्ण 53 में जो था वह भी हुआ और सन् 63 में वह निकल कर आये। आते ही उस समय लाल बहादुर शास्त्री जी होम मिनिस्टर थे। बाद में वह प्राइम-मिनिस्टर हुए, तब उन्होंने इस बात की कोशिश की कि जो धुंधलेपन का वातावरण हो चुका है उसको मिटाया जाय। उस समय भी सेक्यूलेरिज्म के ऊपर जहां तक उनके एक्सप्रेशन का सवाल था कम्पलीटली उन्होंने अपने आपको आइडेन्टीफाई किया और यही कारण था चूंकि मेरा संबंध विशेष उनसे रहा, बहुत करीब आने का मौका मुझे मिला इसलिये मैं यह कह सकता हूं कि हालांकि मैं इतना भाग्यशाली तो नहीं था कि मेरे पास केसर हो लेकिन जो उनकी कीर्ति है, जो उनका जीवन योगदान है हमारे इतिहास में वह अमर है वह स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा। शेख अब्दुल्ला का नाम अमर रहेगा, स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा एक अलग अध्याय होगा उनके नाम का इसमें कोई सन्देह नहीं। आज हमें फिर उनसे प्रेरणा लेनी है कि देश की आजादी की रक्षा करनी है अपने देश की एकता की रक्षा करनी है, देश के जनतन्त्र की रक्षा करनी है। देश में धर्म निरपेक्षता देश में समाजवाद को लाना है। यह पांचों छओं जो हमारे सामने बड़े बड़े मुद्दे हैं, उनको अगर सामने रखना है तो उनकी मिसाल हमारे सामने रहेगी। कोई क्षण ऐसा नहीं था उनके जीवन में जो देश के चिन्तन में नहीं गया हो। इसलिये मैं कहूंगा कि वह महानतम देश भक्त थे। वह महानतम स्वतन्त्रता सेनानी थे। हमेशा अमर ज्योति की तरह से उनकी कीर्ति से हमें प्रेरणा मिलती रहेगी। मैं आशा करता और प्रार्थना करता हूं ईश्वर से कि जो उनके उत्तराधिकारी हैं श्री फारुक अब्दुल्ला वह उसी ढंग से और उसी करीने के साथ···

(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : तारिक अब्दुल्ला।

श्री राजबहादुर : इतना जानता हूं फारुक अब्दुल्ला बड़े हैं और तारिक छोटे हैं। मैं जानता हूं कि जो तारिक कश्मीर टूरिज्म डवलपमेंट कार्पोरेशन के चेयरमैन हैं। फारुक मंत्री हैं। और वह शायद मेरे पुत्र की उम्र के होंगे इतना ध्यान तो मुझे है। खैर, मैं इतना कहना चाहता हूं कि उनके साथ पूरी सहानुभूति है, उनके परिवार के साथ पूरी सहानुभूति है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह हमें इस तरह की शक्ति प्रदान करें, क्षमता प्रदान करें, हम लोग सच्चे मायनों में उन्होंने जो हमारे सामने उदाहरण रखा है हमको प्रेरणा दी है उस पर हम चल सकें। धन्यवाद!

श्री कमलेन्द्र सिंह (वल्लभनगर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता महोदय ने जो सदन में शोक प्रस्ताव प्रस्तुत किया है उसमें मैं अपने आपको और अपने दल की भावनाओं को सम्मिलित करता हूं।

श्री शेख अब्दुल्ला के बारे में बहुत सी बातें कही गईं सदन में। उनका भारत की

(श्री कमलेन्द्र सिंह)

राजनीति से आज से पचास साल तक सम्बन्ध रहा। इन पचास सालों में उन्होंने अपने राजनैतिक जीवन में बहुत उतार चढ़ाव देखे। उन्होंने शुरू में कश्मीर राज्य में स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलन किया। वह उसके लिए कई बार जेल में गये। दूसरी बार आजादी के बाद आजाद भारत की सरकार ने उन्हें दस साल तक जेल में रखा। अध्यक्ष महोदय, शेख अब्दुल्ला ने राजनीति के बजाय कश्मीर की जनता के लिए, मैं यह समझता हूं कि जो काम किया वह ज्यादा महत्वपूर्ण है। जम्मू कश्मीर की गरीब और अशिक्षित जनता थी उस जनता में राजनैतिक चेतना लाने, जागृति लाने और इकानामिक चेतना लाने के लिए, जो उन्होंने कन्ट्रीब्यूशन किया वह ज्यादा महत्वपूर्ण है। उसकी वजह से आज भी जम्मू-काश्मीर की जनता के मन में उनके प्रति बहुत ज्यादा सम्मान और स्नेह है। उसका आधार यही है कि सोशल रिफार्म्स जो लाये थे कश्मीर में और सोशल रिफार्म्स लाने के लिए जो उन्होंने आन्दोलन किया था वह ज्यादा महत्वपूर्ण है।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करूंगा, माननीय अध्यक्ष महोदय, कि उनकी दिवंगत आत्मा को शांति दें और उनके परिजनों को उनके अभाव को सहने की शक्ति और हिम्मत प्रदान करें।

श्री यदुनाथ सिंह (नदबई) : अध्यक्ष महोदय, शेख अब्दुल्ला के स्वर्गवास पर जो सदन के नेता ने शोक प्रस्ताव रखा है उसमें मैं अपने आपको तथा अपने दल को सम्मिलित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, शेख अब्दुल्ला के बारे में सदन में बहुत सी बातें कही गई, लेकिन मैं उनकी एक बात से प्रेरणा लेता हूँ, वह यह मानते थे कि संघर्ष कभी भी असफल नहीं जाता। आजादी से पहले की घटनाओं और आजादी के बाद में उनको इतने साल तक जेल में रखने के बावजूद भी जब उनके विचारों को नहीं बदला जा सका तो आखिर मजबूर होकर हमारी भारत सरकार को उनको वापस ले जाकर कश्मीर का मुख्य मंत्री बनाना पड़ा, इससे यह प्रेरणा मिलती है कि संघर्ष कभी भी खाली नहीं जाता है। अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात का और जिक्र करना चाहूंगा कि शेख अब्दुल्ला हमारे देश के प्रहरी थे। जैसा कि विपक्ष के नेता महोदय ने यहां पर जिक्र किया, शेख अब्दुल्ला हमारे देश के पहले प्रहरी थे जिनको हमने आज खो दिया है। शेख अब्दुल्ला नहीं होते तो मुझे शक है कि कश्मीर पहले हमारा होता ही नहीं। कश्मीर शुरू से ही नहीं होता और आज भी नहीं होता।

मैं ज्यादा नहीं कह कर, अध्यक्ष महोदय, ऐसे महान् नेता और प्रशासक के लिए अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि भगवान उनके परिवार जन को शक्ति दें और उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति दें।

श्री मेघराज तावड़ (गोगुन्दा) : माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता महोदय ने जो शोक प्रस्ताव रखा है उसमें मैं अपने आपको और अपने दल की भावनाओं को शरीक करता हूँ।

अध्यक्ष महोदय, बड़े खेद का विषय है या यूं कहिए कि बड़े ही खेद का दिन है कि

मेघराज तावड़)

अ.दुल्ला जैसे महान् व्यक्ति आज हमारे नहीं रहे। अध्यक्ष महोदय, इनसान कोई हो, अलग-अलग व्यक्ति दुनिया के ी भी कोने में चाहे पैदा हुआ हो, चाहे दुस्तान के किसी भी कोने में पैदा हुआ हो कन वह व्यक्ति मानव समाज के लिए नवता के लिए कुछ दे जाता है तो वह शा याद किया जाता है।

शेख अब्दुल्ला में सभी गुण थे। वह वल एक राजनीतिज्ञ ही नहीं थे वरन् क समाज सुधारक भी थे। समाज के लिए, माज सुधार के लिए जो काम उन्होंने न्ये वह अगर राजनैतिक लोग करते हैं तो पने राजनैतिक क्षेत्र में ही नहीं माने जाते लेकिन वह समाज सुधार के क्षेत्र में भी ने जाते थे।

अध्यक्ष महोदय, जैसा कि अभी सभी साथियों ने कहा और आप सब जानते हैं, उनके बारे में जितना कहा जाय वह कम है लेकिन मैं अपने आप उनसे यह प्रेरणा लेता हूं और यह प्रेरणा देश के लोगों को भी मिलती है कि वह व्यक्ति शुरू से ही संघर्ष में अपने आदर्शों पर मर मिटने को तैयार थे। अपने आदर्शों को लेकर जिस तरह से चले चाहे आजादी के पहले हो या आजादी के बाद हो, उनके जो सिद्धान्त थे उन सिद्धान्तों से चाहे कितनी ही समस्या आई या कठिन समस्या आई कभी विमुख नहीं हुए। तो ऐसे महान् व्यक्ति का उठ जाना हमारे लिए और देश की जनता के लिए बड़ा दुखदायी है। जितने भी स्वतंत्रता सेनानी और हमारे पुराने महान् लोग थे, देश को जो बनाने वाले थे एक एक करके सब उठते चले जा रहे हैं। ऐसे महान् लोगों के आदर्शों पर हमें चलना चाहिए, उनसे कुछ सीखना चाहिए।

मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से महान् आत्मा को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री अध्यक्ष : सदन के नेता महोदय, विपक्ष के नेता महोदय और इस सदन के अलग अलग दलों के नेताओं ने स्वर्गीय शेख साहब के प्रति जो श्रद्धांजलि अर्पित की और अपने भाव व्यक्त किये उसमें मैं अपने आपको सम्मिलित करता हूं।

शेख साहब के हमारे बीच में से उठ जाने से हमारे देश को एक अपार क्षति हुई है और एक महान् व्यक्ति, एक महान् हस्ती हमारे बीच से चली गई है।

शेख साहब 50 साल तक इस देश की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते रहे। स्वतंत्रता संग्राम में देशी राज्यों की जो पीड़ित जनता थी उसका उन्होंने नेतृत्व किया। पिछड़ेपन, गुलामी और कई तरह की जो समस्यायें गुलाम देश और पिछड़े देश के साथ जुड़ी होती हैं उनको सुलझाने में और देश और अपने प्रदेश कश्मीर के आधुनिकीकरण में उन्होंने शानदार भूमिका अदा की।

शेख साहब को पहले पहल मैंने जब पंडित जवाहरलाल नेहरू 1945 में मेरे विद्यार्थी जीवन में कालेज में आये थे उस वक्त देखा। उस वक्त वह आल इण्डिया स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेन्स के मंत्री थे। जैसा आप सब जानते हैं उनका व्यक्तित्व काफी प्रभावशाली था, काफी लम्बे चौड़े कद के थे। बड़ा आकर्षक उनका व्यक्तित्व था।

(श्री अध्यक्ष)

उस वक्त देश की आजादी करीब थी। आप और हम उस समय की परिस्थितियों से अच्छी तरह से परिचित हैं, देश के अन्दर दो विचारधारायें चल रही थीं। एक तरफ कांग्रेस की, जिसका नेतृत्व महात्मा गांधी और पण्डित जवाहरलाल नेहरू कर रहे थे। वह भारत को एक बनाए रखने के लिये संघर्ष कर रहे थे। दूसरी तरफ जाति, सम्प्रदाय या धर्म के नाम पर एक अलग राष्ट्र बनाने की बात चलती थी। उन दिनों इस संघर्ष को लेकर कितना खून खराबा हुआ और किन परिस्थितियों में हमारे देश का विभाजन हुआ, उसमें मुझे गहराई में जाने की जरूरत नहीं है। लेकिन हमने देश के टुकड़े होने के बाद में भी यह तय किया कि हमारा देश धर्म निरपेक्षता के आधार पर चलेगा। इस नीति का निर्णय करने में जो शेख साहब की भूमिका थी वह एक ऐतिहासिक भूमिका थी क्योंकि जितने भी मुस्लिम बहुल प्रदेश थे वह हमारे देश से अलग हो गए। लेकिन कश्मीर मुस्लिम बहुल क्षेत्र होते हुए भी उस वक्त की असाधारण परिस्थितियों में शेख साहब के कारण हमारे साथ रहा। जो जातीयता और साम्प्रदायिकता का उभार हमारे देश के अन्दर चल रहा था उसमें शेख साहब की यह भूमिका थी कि हमें भारत के धर्म निरपेक्ष राज्य के साथ रहना चाहिये, बहुत ही महत्वपूर्ण है और यह अपने आप में एक ऐतिहासिक घटना है।

शेख साहब हमारे देश के ही नहीं इस पूरे उपमहाद्वीप, जिसमें बंगला देश, पाकिस्तान और भारत आता है, के महान नेता थे और यही नहीं आज के वर्तमान के मुस्लिम जगत के भी एक महान् नेता थे। उनकी विचारधारा जो प्रारम्भ में थी 1945 में जब हम पहले पहल देखा उस वक्त जो उनके विचार थे आखिर तक वह उन्हीं विचारों पर दृढ़ रहे और चूंकि राजस्थान का प्रदेश था यह देशी राज्यों का प्रदेश था इसलिए हमारे और शेख साहब के बीच में नजदीकी और भी महत्वपूर्ण, और भी अधिक हो जाती है। भूमि सुधार और राजाशाही का नये युग के अन्दर क्या स्थान हो इसकी शुरूआत भी शेख साहब ने पहले पहल हमारे देश के अन्दर प्रारम्भ की। कठिन से कठिन दौर में से हमारे देश को गुजरना पड़ा और उसमें खास बात यह थी कि अर्थनीति हमारी क्या हो, हमारा शासन तंत्र किस तरह का हो, अलग अलग जातियों और धर्म के लोग इस देश में बसते हैं उनका इस देश की राजनीति में और देश के शासन में क्या स्थान हो। यह हमारे मूल प्रश्न थे। शेख साहब ने इन तीन चार बातों पर अपने विचार कभी भी नहीं बदले।

शेख साहब शेरे कश्मीर कहलाते थे। शेर नाम काफी एक डरावने पशु का होता है लेकिन जैसा कि विपक्ष के नेता महोदय ने कहा कि शेख साहब व्यक्तिगत जीवन में बहुत ही सरल स्वभाव के सहृदयी, दयालु प्रकृति के व्यक्ति थे और उन्होंने जो हमारे देश की मूल धारायें थीं उनके साथ हमेशा जोड़े हुए रखा यद्यपि उनके और हमारे बीच में कई दफा राजनैतिक मतभेद भी आये, उनको काफी संघर्ष भी करना पड़ा। लेकिन जो मूल धारा इस देश की है, विचारधारा, उससे शेख साहब कभी अलग नहीं हुए। इस मायने में हम उनको एक प्रेरणा का स्रोत मान कर चल सकते हैं।

(श्री अध्यक्ष)

शेख साहब आज हमारे बीच में नहीं हैं। ऐसे वयोवृद्ध व्यक्ति का हमारे बीच में से उठ जाना हम सब के लिये बड़े ही दुर्भाग्य की बात है। मैं परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वह उनकी आत्मा को चिर शांति प्रदान करें और उनके परिवारजन, मित्र, अनुयायी उन सबको इस महान् दुख को झेलने की शक्ति दें।

अब मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि वह अपने स्थान पर दो मिनट मौन खड़े होकर शेख साहब को श्रद्धांजलि अर्पित करें।

(सदन ने दो मिनट मौन खड़े रहकर स्वर्गीय शेख मोहम्मद अब्दुल्ला को श्रद्धांजलि अर्पित की)

कृपया स्थान ग्रहण कीजिए।

सदन की कार्यवाही कल शुक्रवार दिनांक 10 सितम्बर, 1982 के प्रातः 11 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही म. पू. 11.42 बजे शुक्रवार दिनांक 9 सितम्बर, 1982 के प्रातः 11.00 बजे तक के लिये स्थगित हुई)